I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

जनजाति युवाओं की राजनीतिक सहभागिता: उदयपुर ग्रामीण और झाड़ोल विधानसभा का तुलनात्मक विश्लेषण

डॉ. रामचंद्र पालीवाल[1*]

[1]अतिथि व्याख्याता, राजनीति विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *डॉ. रामचंद्र पालीवाल

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14629187

सारांश

राजनीतिक सहभागिता आमतौर पर लोकतंत्र के आधुनिक रूप से जुडी हुई है। ये किसी भी लोकतान्त्रिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। राजनीतिक सहभागिता का आशय है; कोई व्यक्ति अपने विचारों और विश्वासों को ज्ञात करके राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से सहभागी बन रहा है। दक्षिण राजस्थान के जनजाति युवाओं की राजनीति में सहभागिता की स्थिति देखें तो इन युवाओं की सहभागिता उनकी जनसंख्या के अनुपात में काफी कम है और यह सहभागिता केवल स्थानीय स्तर की संस्थाओं तक ही सीमित है जिसके कारण उनका राजनीतिक सशक्तिकरण नहीं हो पा रहा है। हालांकि उनकी मतदान में सहभागिता अवश्य बढ़ी है। इन युवाओं की कम सहभागिता का कारण राजनीतिक जागरूकता का अभाव, शिक्षा की कमी और इनका सामाजिक पिछड़ापन है। प्रस्तुत शोध पत्र इन्हीं मुद्दों को रेखांकित करते हुए राजस्थान के उदयपुर ग्रामीण और झाड़ोल विधानसभा क्षेत्रों में जनजातीय युवाओं की राजनीतिक सहभागिता का तुलनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास करता है। यह शोध पत्र प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 19-11-2024
- **Accepted:** 26-12-2024
- **Published:** 10-01-2025
- **IJCRM:**4(1); 2025: 16-21
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

रामचंद्र पालीवाल, जनजाति युवाओं की राजनीतिक सहभागिता: उदयपुर ग्रामीण और झाड़ोल विधानसभा का तुलनात्मक विश्लेषण. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.2025;4(1): 16-21.

मुख्य शब्द: राजनीतिक सहभागिता, मतदान व निर्वाचन, अप्रकाशित अभिलेखों

राजनीतिक सहभागिता: एक परिचय

किसी राजनीतिक प्रक्रिया में जनता की सक्रिय सहभागिता यह दर्शाती है कि राजनीतिक व्यवस्था में विभिन्न लोग अपनी अभिवृत्ति के अनुरूप भाग ले रहे हैं। इस सहभागिता के विविध आयाम होते हैं जिनमें प्रमुख रूप से राजनीतिक राजनीतिक अभिमुखीकरण, राजनीतिक प्रश्नों के संबंध में जिज्ञासा, स्पष्ट दृष्टिकोण का अभिकल्पन, राजनीतिक दलों की गतिविधियों में भागीदारी, मतदान व निर्वाचन में भागीदारी आदि शामिल हैं। राजनीतिक सहभागिता को एक सचेतन प्रक्रिया के रूप में समझ सकते है, जिसमें सहभागी, राजनीतिक प्रक्रिया में अपनी सक्रियता, उद्देश्यों और प्रभावों के प्रति जानकारी रखते हुए विकल्पों का विवेकपूर्ण चयन करता है। इस प्रकार वास्तविक और सार्थक सहभागिता लोक प्रशिक्षण की अनिवार्यता को दर्शाता है। लोकतंत्र में जनता की सहभागिता तभी सार्थक हो सकती है, जब जनता लोकतान्त्रिक प्रक्रिया के औपचारिक चरणों का निर्धारण करे। इसी के साथ, अन्य लोगों का समर्थन प्राप्त करने की तत्परता, जनमत की सामाजिक अभिव्यक्ति की पहचान तथा श्रेष्ठ शासन के चयन की एक प्रक्रिया के रूप में चुनावों में विश्वास एवं भागीदारी तथा मतदान के माध्यम से अपने दृष्टिकोण, विचारों, नीतिगत प्राथमिकताओं तथा राजनीतिक दल के प्रति समर्थन की अभिव्यक्ति आदि राजनीतिक सहभागिता के आवश्यक तत्व माने जा सकते है। राजस्थान की राजनीति में जनजातियों की सहभागिता काफी कम रही हैं। सक्रिय राजनीति में जनजाति समाज की सहभागिता उनके लिए आरक्षित सीटों तक ही सीमित है, क्योंकि राजनीति में क्षेत्रीय नेतृत्व अक्सर उन नेताओं के हाथों में रहता है जिनकी जाति की बहुलता उस क्षेत्र विशेष में रहती हैं और चुनावी राजनीति में उस जाति विशेष से जनप्रतिनिधि का चुनाव होता हैं। राजस्थान की विधानसभा में जनजाति वर्ग के लिए 25 सीटें आरक्षित हैं जिनमें सर्वाधिक जनजाति बहुल

© 2025 डॉ. रामचंद्र पालीवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

उदयपुर जिले में 16 है। इन सीटों पर जनजातीय समुदाय की जनसंख्या अधिक है; अतः ये मतदाता चुनावों में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। राजस्थान के दोनों ही प्रमुख दलों भाजपा और कांग्रेस से जनजातीय उम्मीदवार ही चुनाव लडते हैं। राजनीति में क्षैत्रीय नेतृत्व अधिकार उन नेताओं के हाथ में रहता है जिनकी जाति का बहुमत उस क्षैत्र विशेष में होता है। लेकिन यह बात दक्षिण राजस्थान के आदिवासी बहुल क्षैत्र के लिए अपवाद है, क्योंकि इस क्षैत्र का राजनीतिक नेतृत्व हमेशा से ही गैर-आदिवासियों के हाथों में रहा है। पिछले सात दशकों से इस जनजाति बहुल क्षैत्र से आठ बड़े राजनेता राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचने में सफल रहे हैं। लेकिन इनमें से एक भी नेता जनजाति समुदाय से संबंधित नहीं था। सन् 2008 में हुए परिसीमन के बाद आदिवासी बाहुल्य उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ की 20 में से 16 सीटे जनजाति समुदाय के लिए आरक्षित है। परन्तु इन 17 आरक्षित सीटों में से एक भी ऐसा नेता नहीं उभरा जिसकी पहचान राष्ट्रीय स्तर पर बनी हो। राजस्थान की राजनीति में यह माना जाता है कि प्रदेश में सत्ता का रास्ता आदिवासी क्षेत्रों की तरफ से जाता है। इसी कारण राज्य के दो प्रमुख दल कांग्रेस और भाजपा आदिवासी बहुल क्षेत्रों में अपनी पकड़ को कायम रखना चाहते हैं। हाल ही में, दक्षिण राजस्थान की राजनीति में बदलाव के संकेत मिल रहे है। 2018 में विधानसभा चुनावों के दौरान वर्ष 2017 में गठित भारतीय ट्राइबल पार्टी ने आदिवासी बहुल क्षैत्र की हो दो सीटों पर जीत दर्ज की।

अध्ययन क्षेत्र: प्रस्तुत शोध में अनुसूचित जनजाति के युवा वर्ग की राजनीतिक सहभागिता का अध्ययन दक्षिणी राजस्थान के अनुसूचित जनजाति क्षेत्र के विशेष संदर्भ में किया किया गया है। दक्षिणी राजस्थान के उदयपुर जिले में कुल 8 विधानसभा क्षेत्र है। इ आठ विधानसभा क्षेत्रों में से चयनित दो विधानसभा क्षेत्र उदयपुर ग्रामीण और झाड़ोल विधानसभा क्षेत्रों का तुलनात्मक अध्ययन को इस शोध कार्य में शामिल किया गया है।

शोध सामग्री और शोध प्रविधियाँ:

शोध अध्ययन "अनुसूचित जनजाति के युवा वर्ग की राजनीतिक सहभागिता का मूल्यांकन" में निम्नलिखित शोध प्रविधि एवं शोध सामग्री का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोतः प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत प्रश्नावली व साक्षात्कार द्वारा आंकड़ों को एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गया है। इसके अंतर्गत चयनित दो विधानसभा क्षेत्रों उदयपुर ग्रामीण एवं झाड़ोल के प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र से देव निदर्शन पद्दति द्वारा- 5-5 मतदान केन्द्रों का चयन किया गया है तथा प्रत्येक मतदान केन्द्र से 25-25 युवा मतदाताओं का सोद्देश्य प्रणाली अपनाते हुए साक्षात्कार किया गया है। इस प्रकार कुल 250 मतदाताओं के साक्षात्कार को इस अध्ययन में शामिल किया गया है।

द्वितीयक स्रोतः प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों में पूर्व में प्रकाशित दस्तावेजों, समाचार-पत्रों, प्रतिवेदनों, इन्टरनेट एवं सम्बन्धित साहित्य को शामिल किया गया है। साथ ही, इस अध्ययन से सम्बन्धित चुनाव आयोग के आंकड़े, सरकारी कार्यालय, रिकार्ड, पुस्तके, पत्र-पत्रिकाएं तथा जनजातिय उपयोजना क्षेत्र की वार्षिक प्रतिवेदनों तथा अन्य संस्थाओं में उपलब्ध प्रकाशित एवं अप्रकाशित अभिलेखों सहायता से विभिन्न समस्यात्मक तथ्यों एवं प्रश्नों को सुलझाने का प्रयास किया गया है।

जनजातीय युवाओं की राजनीतिक सहभागिता: एक विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन उदयपुर जिले के चयनित दो विधानसभा क्षेत्रों यथा उदयपुर ग्रामीण और झाड़ोल के अंतर्गत अनुसूचित जनजाति के युवाओं की राजनीति में सहभागिता का अध्ययन उनके वैयक्तिक अनुभव के आधार पर किया गया है कि वे राजनीति के बारे में क्या सोचते हैं और उनकी राजनीति में भागीदारी को कैसे बढ़ाया जा सकता है। चूंकि ये विधानसभा क्षेत्र सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से काफी पिछड़े हुए हैं और लोगों की राजनीतिक स्थिति भी काफी कमजोर है इसलिए इस क्षेत्र में युवा वर्ग की राजनीति में भागीदारी अति-आवश्यक है ताकि वे मिलकर स्थानीय समस्याओं को उठा सकें और उसके समाधान का प्रयास कर सके। यह अध्ययन इन दोनों विधानसभा क्षेत्रों में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए उपस्थित बाधाओं और चुनौतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। साथ ही, इन क्षेत्रों में युवाओं की राजनीति में सहभागिता कैसे बढ़ाई जाए। उसके लिए भी उचित सुझाव देने का प्रयास करता है।

राजनीतिक विषयों में युवाओं की रूचि

आयु वर्ग	हाँ			नहीं			कुल उत्तरदाता
	पुरुष	महिला	कुल	पुरुष	महिला	कुल	
18 से 25	31	27	58	6	8	14	72
26 से 32	38	36	74	6	13	19	93
33 से 40	36	26	62	6	17	23	85
कुल उत्तरदाता	105	89	194	18	38	56	250

स्रोतः शोध सर्वे

कुल 250 युवा उत्तरदाताओं में से दो-तिहाई से अधिक युवा उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें राजनीति में रूचि है। जबकि एक-तिहाई से कम युवाओं ने राजनीति में रूचि को नकार दिया है। जिन युवाओं ने राजनीति में रूचि व्यक्त की है; उनमें सर्वाधिक उत्तरदाता (30 प्रतिशत) 26 से 32 आयु वर्ग के हैं। जबकि सबसे कम रूचि 18 से 25 वर्ष की आयु वर्ग के युवाओं की है। इस तरह कुल युवा उत्तरदाताओं में से तीन-चौथाई उत्तरदाताओं ने राजनीति में अपनी रूचि व्यक्त की हैं। एक-चौथाई से कम (22 प्रतिशत) युवा उत्तरदाताओं ने राजनीति में अपनी रूचि व्यक्त नहीं की है।

© 2025 डॉ. रामचंद्र पालीवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

आर्थिक पृष्ठभूमि का युवाओं की राजनीतिक जागरूकता पर प्रभाव

आयु वर्ग	हाँ	नहीं	कोई राय नहीं	कुल उत्तरदाता
18 से 25 वर्ष	49	10	13	72
26 से 32 वर्ष	62	09	22	93
33 से 40 वर्ष	66	07	12	85
कुल उत्तरदाता	177	26	47	250

स्रोतः शोध सर्वे

युवा वर्ग के मतदाताओं की आर्थिक पृष्ठभूमि का उनके राजनीतिक ज्ञान और जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में लगभग तीन-चौथाई युवाओं का मानना है कि आर्थिक पृष्ठभूमि का मतदाताओं की राजनीतिक जागरूकता पर व्यापक पड़ता हैं। उत्तरदाताओं के अनुसार व्यक्ति की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने पर वह राजनीति में सक्रिय रूप से भाग ले सकता हैं। 10 प्रतिशत युवाओं ने इस बात को नकार दिया है। जबकि 18 प्रतिशत युवाओं ने इस बारे में कोई राय व्यक्त नहीं की है।

शिक्षा का युवाओं की राजनीतिक जागरूकता पर प्रभाव

क्रम.सं .	आयु वर्ग	हाँ	नहीं	कोई राय नहीं	कुल उत्तरदाता
1	18 से 25 वर्ष	58	07	07	72
2	26 से 32 वर्ष	66	10	17	93
3	33 से 40 वर्ष	69	05	11	85
कुल उत्तरदाता		193	22	35	250

स्रोतः शोध सर्वे

शिक्षा का मतदाता की राजनीतिक जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव के अंतर्गत 77 प्रतिशत युवा उत्तरदाताओं का मानना है कि शिक्षित व्यक्ति राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक होता है और अपने मताधिकार का प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से करता है। इसी संदर्भ में लगभग 9 प्रतिशत युवा मतदाताओं का विचार है कि शिक्षा का राजनीतिक जागरूकता पर कोई असर नहीं पड़ता है, जबकि 14 प्रतिशत युवाओं ने इस पर कोई राय व्यक्त नहीं की हैं।

मीडिया कवरेज और युवाओं की राजनीतिक जागरूकता

आयु वर्ग									कुल उत्तरदाता
18 से 25 वर्ष			26 से 32 वर्ष			33 से 40 वर्ष			
हाँ	नहीं	कोई राय नहीं	हाँ	नहीं	कोई राय नहीं	हाँ	नहीं	कोई राय नहीं	
46	14	12	57	22	14	61	16	08	250

स्रोतः शोध सर्वे

जनसंचार के साधनों का विभिन्न मतदाताओं की राजनीति जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में लगभग आधे से अधिक युवाओं का मत है कि इसका प्रभाव उनकी राजनीतिक जागरूकता के स्तर पर पड़ा हैं। इनके अनुसार विभिन्न समाचार-पत्रों और न्यूज चैनलों के राजनीति से संबंधित व्याख्यानों और बहसों का उन पर व्यापक प्रभाव पड़ा है जिससे वे राजनीति में रूचि लेने लगे हैं। जबकि 21 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि मीडिया कवरेज का उनकी राजनीतिक जागरूकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसी प्रकार लगभग 14 प्रतिशत युवाओं ने इस पर कोई राय व्यक्त नहीं की हैं।

चुनावी संबंधी गतिविधियों में मतदाताओं की भागीदारी

चुनाव संबंधी गतिविधियां	आयु वर्ग									कुल उत्तरदाता
	18 से 25 वर्ष			26 से 32 वर्ष			33 से 40 वर्ष			
	हाँ	नहीं	लागू नहीं	हाँ	नहीं	लागू नहीं	हाँ	नहीं	लागू नहीं	
उम्मीदवार के लिए धन इकट्ठा करना	13	42	17	11	67	15	09	68	08	250
चुनावी बैठकों में भाग लेना	56	09	07	78	10	05	68	09	08	250
चुनाव अभियान में हिस्सेदारी करना	53	06	13	72	12	09	60	08	17	250
टीवी पर चुनाव संबंधी कार्यक्रम देखना	54	10	08	66	15	12	58	13	14	250

स्रोतः शोध सर्वे

© 2025 डॉ. रामचंद्र पालीवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इनमें लगभग 80 प्रतिशत लोगों ने विभिन्न चुनावी बैठकों और रैलियों में भाग लिया हैं। साथ ही, उन्होंने चुनाव अभियान में भी सक्रिय रूप से भाग लिया है। जबकि विभिन्न चेनलों पर चुनाव संबंधी कार्यक्रम देखने वाले मतदाताओं का प्रतिशत 70 हैं। सबसे कम मतदाताओं ने उम्मीदवार के लिए धन इकट्ठा करने की राय व्यक्त की है।

विधानसभा चुनावों में मतदान की स्थिति (2013 एवं 2018)

आयु (वर्षों में)	पुरुष		महिला		कुल उत्तरदाता
	हाँ	नही	हाँ	नही	
18 से 25	32	05	30	05	72
26 से 32	38	06	41	08	93
33 से 40	36	06	37	06	85
	106	17	108	19	250

स्रोतः शोध सर्वे

पिछले विधानसभा चुनावों में विभिन्न उत्तरदाताओं द्वारा अपने मत का उपयोग करने के संदर्भ में पता चलता है कि कुल दो-तिहाई उत्तरदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया है। इनमें पुरुष मतदाताओं की संख्या लगभग आधी है और महिला मतदाता भी लगभग समान है। अर्थात पुरुष और महिलाओं ने प्रयोग लगभग समान रूप से किया है। महिला और पुरुष उत्तरदाताओं की जागरूकता के संदर्भ में देखें तो पता चलता है कि इन दोनों समूहों में मतदान के प्रति जागरूकता बढ़ी है। इसमें महिलाऐं पुरुषों की अपेक्षा अधिक जागरूक हैं।

युवा नेता और अन्य नेताओं की बेहतर शासन के संदर्भ में तुलना

आयु वर्ग	**हाँ**		**नहीं**		**कोई राय नहीं**		**कुल उत्तरदाता**
	पुरुष	**महिला**	**पुरुष**	**महिला**	**पुरुष**	**महिला**	
18 से 25 वर्ष	34	30	03	02	01	02	72
26 से 32 वर्ष	47	30	03	03	04	06	93
33 से 40 वर्ष	38	33	02	02	04	06	85
कुल उत्तरदाता	119	93	08	07	09	14	250

स्रोतः शोध सर्वे

अधिकतर उत्तरदाताओं का मानना है कि युवा नेता अन्य नेताओं की अपेक्षा बेहतर शासन कर सकते हैं। इसमें लगभग दो-तिहाई से अधिक उत्तरदाताओं ने अपनी सहमति व्यक्त की हैं। जबकि केवल 6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसे नकार दिया है और अन्य 9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई राय व्यक्त नहीं की हैं। इस तरह, अधिकांश उत्तरदाताओं का विचार है कि युवा नेता अपनी असीमित क्षमता और कार्य कुशलता से बेहतर शासन कर सकते हैं। महिला उत्तरदाताओं की इस बारे में स्थिति देखें तो पता चलता है कि लगभग एक-चौथाई से अधिक महिलाओं ने माना है कि युवा नेता अन्य नेताओं की तुलना में बेहतर शासन करने में समर्थ हैं। जबकि केवल तीन प्रतिशत महिलाऐं इस मत से सहमत नहीं हैं।

युवाओं की विभिन्न राजनीतिक मुद्दों पर विरोध-प्रदर्शनों में भागीदारी

आयु वर्ग	**हाँ**		**नहीं**		**कोई राय नहीं**		**कुल उत्तरदाता**
	पुरुष	**महिला**	**पुरुष**	**महिला**	**पुरुष**	**महिला**	
18 से 25 वर्ष	14	08	17	10	12	11	72
26 से 32 वर्ष	17	12	18	20	11	15	93
33 से 40 वर्ष	19	07	13	10	16	20	85
कुल उत्तरदाता	50	27	48	40	39	46	250

स्रोतः शोध सर्वे

युवाओं की विभिन्न राजनीतिक मुद्दों पर विरोध-प्रदर्शनों में भागीदारी के संदर्भ में लगभग 31 प्रतिशत युवाओं ने पिछले एक वर्ष में किन्हीं राजनीतिक मुद्दों से संबंधित विरोध प्रदर्शन और जुलूसों में हिस्सा लिया हैं। जबकि 35 प्रतिशत युवाओं ने किसी भी प्रकार से इन विरोध प्रदशनों में हिस्सा नहीं लिया हैं। 34 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस पर कोई राय व्यक्त नहीं की है। लैंगिक आधार पर महिला उत्तरदाताओं की विभिन्न जुलूस और विरोध-प्रदर्शनों में भागीदारी की स्थिति देखें तो पता चलता है कि लगभग 11 प्रतिशत महिलाओं ने इन विरोध-प्रदर्शनों में हिस्सा लिया है। जबकि 16 प्रतिशत महिलाओं ने किसी भी प्रकार के विरोध-प्रदर्शनों में भागीदारी नहीं की है। जबकि 18 प्रतिशत महिलाओं ने इस

© 2025 डॉ. रामचंद्र पालीवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

बारे में कोई राय व्यक्त नहीं की है। इस प्रकार पुरुषों की अपेक्षा महिला उत्तरदाताओं की इनमें भागीदारी कम है। इसका प्रमुख कारण उनका शैक्षिक पिछड़ापन और सामाजिक बाध्यताएं हैं जिनके कारण वे राजनीतिक क्षेत्रों में अधिक सक्रिय नहीं हैं।

विभिन्न राजनीतिक दलों में युवाओं की सम्बद्धता

राजनीतिक दल का नाम	आयु वर्ग						कुल उत्तरदाता
	18 से 25 वर्ष		26 से 32 वर्ष		33 से 40 वर्ष		
	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	
कांग्रेस	08	07	08	07	08	07	45
भाजपा	10	08	11	09	10	08	56
अन्य पार्टी	05	04	07	06	07	06	35
कुल उत्तरदाता	23	19	26	22	25	21	136

स्रोतः शोध सर्वे

युवाओं की किसी राजनीतिक दल से सम्बद्धता के संदर्भ में 55 प्रतिशत युवाओं ने माना है कि वे किसी न किसी राजनीतिक दल से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। इसी दलीय सम्बद्धता पर ध्यान केन्द्रित करते हुए उत्तरदाताओं से राजनीतिक दल का नाम पूछा गया जिनमें सबसे अधिक उत्तरदाता भाजपा से जुड़े हुए है जो लगभग 41 प्रतिशत हैं। जबकि अन्य प्रमुख पार्टी कांग्रेस से 33 प्रतिशत युवा जुड़े हुए हैं। अन्य पार्टी से संबंधित उत्तरदाता करीब 25 प्रतिशत है। लैंगिक आधार पर महिला उत्तरदाताओं का किसी राजनीतिक दल के प्रति जुड़ाव की स्थिति देखें तो पता चलता है कि लगभग आधे से कुछ कम महिला उत्तरदाता किसी न किसी राजनीतिक दल से जुडी हुई हैं। इनमें से 15 प्रतिशत महिलाऐं कांग्रेस पार्टी से जुडी हुई हैं। जबकि लगभग 18 प्रतिशत महिलाऐं भारतीय जनता पार्टी से अपना जुड़ाव रखती हैं। इसी प्रकार लगभग 12 प्रतिशत महिलाऐं अन्य स्थानीय पार्टियों से जुडी हुई हैं। इस प्रकार सबसे अधिक महिलाऐं भाजपा से सम्बद्ध है।

राजनीति में परिवारवाद और वंशवाद के बारे में युवाओं की राय

आयु वर्ग	हाँ		नहीं		कोई राय नहीं		कुल उत्तरदाता
	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	
18 से 25 वर्ष	30	27	04	06	03	02	72
26 से 32 वर्ष	36	41	06	05	02	03	93
33 से 40 वर्ष	32	34	04	07	06	02	85
कुल उत्तरदाता	98	102	14	18	11	07	250

स्रोतः शोध सर्वे

भारतीय राजनीति में आज भी परिवारवाद और वंशवाद हावी है। इसके कारण अपने योग्य युवा नेताओं को राजनीति में स्थान नहीं मिल पा रहा है और जिन परिवारों के सदस्य पहले से ही राजनीति में सक्रिय हैं। उनके युवा सदस्य ही राजनीति में सफल हो रहे है जिससे आम युवा वर्ग में व्यापक रूप से असंतुष्टी व्याप्त हैं। इस संदर्भ में लगभग दो-तिहाई युवाओं ने माना है कि राजनीति में उनको मौका नहीं मिलने का प्रमुख कारण उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि का कोई सदस्य राजनीति में नहीं हैं। उनके अनुसार वर्तमान में जो भी नए लोग राजनीति में आ रहे हैं। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि राजनीतिक है जिससे उनको अधिक मौका नहीं मिल पाया है और राजनीतिक दल उन्हीं युवाओं को अधिक बढ़ावा दे रहे हैं जिनके परिवार के सदस्य पहले से ही राजनीति में सक्रिय हैं। इसी तरह लगभग 13 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि वास्तविकता में ऐसा नहीं है और अन्य युवाओं को भी राजनीति में अवसर मिल रहे हैं। इसी तरह लगभग 7 प्रतिशत युवा उत्तरदाताओं ने इस संबंध में कोई राय व्यक्त नहीं की हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव

जनजातीय क्षेत्र में जनजातीय युवाओं की वर्तमान राजनीतिक भागीदारी की स्थिति देखें तो पता चलता है कि इन क्षेत्रों में अधिकांश जनजातीय युवाओं की राजनीति से जुडी प्रमुख समस्या यह है कि उन्हें अभी भी राजनीति में उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाया है। अधिकांश जनजातीय युवा केवल स्थानीय स्तर की राजनीति तक ही सीमित है जिसके कारण उनका राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर उचित नेतृत्व उभरकर सामने नहीं आ पा रहा है। इसके पीछे अनेक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारण है। एक तो उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण वे अपना अधिकांश समय रोजगार और आर्थिक संसाधन जुटाने में ही लगा देते है जिससे उन्हें राजनीति में भाग लेने का समय नहीं मिल पाता है। दूसरा, उनका सामाजिक पिछड़ापन है जिससे वे केवल स्थानीय स्तर तक ही अपनी पहुँच रखते हैं और आगे नहीं बढ़ पाते हैं। इनका समाज अभी अन्य समाजों की अपेक्षा काफी पिछड़ा हुआ है और आधुनिकीकरण के प्रभावों से वंचित है। ये लोग पारम्परिक जनजीवन ही जीते हैं जिससे ये समाज आज भी काफी पिछड़ा हुआ माना जाता है। तीसरा प्रमुख कारण, उनमें अभी भी शिक्षा का स्तर काफी निम्न है जिसके कारण उनमें राजनीतिक जागरूकता का काफी अभाव है। हालांकि इनके समुदाय से काफी लोग राजनीति में सक्रिय हैं। परन्तु अपने ही समाज की उपेक्षा करते हैं जिसके कारण इनके क्षेत्र का भी अधिक विकास नहीं हो पाया है और आज भी ये लोग पिछड़े हुए हैं। इन क्षेत्रों में परिवारवाद और वंशवाद का राजनीति में प्रभाव है जिसकी वजह

© 2025 डॉ. रामचंद्र पालीवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

से पहले से सक्रिय नेताओं के परिवार वाले राजनीति में अपनी जगह बना पा रहे हैं और युवाओं को उचित अवसर नहीं मिल पा रहा है। महिलाओं की राजनीतिक स्थिति देखें तो पता चलता है कि इन जनजातीय क्षेत्रों में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी पुरुषों की अपेक्षा काफी कम है और कुछ भागीदारी केवल स्थानीय स्तर तक ही सीमित है। इसके अतिरिक्त, इन जनजाति महिलाओं में शिक्षा की काफी कमी है जिसकी वजह से वे अपने अधिकारों के बारे में जागरूक नहीं है। इसके अलावा, उनके सामाजिक पिछड़ेपन के कारण इन क्षेत्रों में पुरुषों का ही वर्चस्व है और महिलाऐं केवल पारिवारिक और सामाजिक कार्यों तक ही सीमित होकर रह गयी हैं। उपरोक्त सभी कारणों की वजह से जनजातीय क्षेत्रों में जनजातीय युवाओं की राजनीतिक भागीदारी काफी कम है और जनजातीय महिलाओं की स्थिति भी काफी अच्छी नहीं है। इसमें सुधार की अधिक आवश्यकता है ताकि ये जनजातीय युवा भी राजनीतिक क्षेत्र में आगे बढ़ सकें और अपने समाज और क्षेत्र के विकास में योगदान दे सकें।

इस शोध के निष्कर्षों से पता चलता है कि इन जनजातीय क्षेत्रों में जनजातीय युवाओं का राजनीतिक सहभागिता और राजनीति के प्रति जागरूकता काफी कम है। इसमें सुधार किया जाना अति-आवश्यक है जिससे इन युवाओं की राजनीति में सहभागिता बढ़ाई जा सके। इस शोध के निष्कर्षों के आधार पर कुछ सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं जो निम्नलिखित हैं:-

- जनजातीय युवाओं को सभी क्षेत्रों में अधिक भागीदारी दी जानी चाहिए जिसमें राजनीतिक भागीदारी भी शामिल है।
- सरकार को क्रियाशील युवा नीति का निर्माण करना चाहिए जो जनजातीय युवाओं को अधिक प्रतिनिधित्व दे सके।
- जनजातीय युवाओं को अपने मतदान का विवेकपूर्ण प्रयोग करना चाहिए और अपना मत बिना किसी प्रलोभन और लालच में आकर देना चाहिए जो दुसरे लोगों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बने और अच्छे उम्मीदवार जीत सकें।
- जनजातीय युवाओं में बदलाव की पहल होनी चाहिए और उन्हें राजनीति में अधिक से अधिक मौका देना चाहिए। जनजातीय युवाओं की सोच और सामर्थ्य का अधिकतम प्रयोग राजनीति में हो, यही समय की मांग है।
- जनजातियों युवाओं की आज भी सबसे बड़ी समस्या आर्थिक पिछड़ापन है। इसका समाधान करने लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने के साथ ही स्वरोजगार की सुविधाओं को बढ़ाना जरूरी हैं।
- सरकार और चुनाव आयोग को भी समय-समय पर जनजाति क्षेत्रों में विशेष राजनीतिक जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए जिससे वे चुनाव के समय अधिक मतदान करने के साथ-साथ राजनीतिक रूप से भी जागृत हों और अपने मत का प्रयोग विवेकानुसार कर सकें।
- जनजाति महिलाओं को भी अपने क्षेत्र से बाहर निकलकर इनके समाज का नेतृत्व करना चाहिए जिससे उनमें सामाजिक पिछड़ापन दूर हो सकेगा और इनका सामाजिक सशक्तिकरण हो सकेगा। राजनीति के क्षेत्र में भी जनजाति महिलाओं को आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मिलब्रैथ एलडब्ल्यू, लाल एमजी. *पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन: हाउ एंड वाय डू पीपुल गेट इन्वॉल्व्ड इन पॉलिटिक्स.* शिकागो: रैंड मैकनेली एंड कंपनी; 1977
2. दोषी एसएल, व्यास एन. *राजस्थान की अनुसूचित जनजातियां.* उदयपुर: हिमांशु पब्लिकेशन; 1992
3. गेरेंट पी, मॉयजर जी, डे एन. *पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन एंड डेमोक्रेसी इन ब्रिटेन.* कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस; 1992
4. भंडारी व. *राजस्थानः सामंतवाद से जातिवाद के भंवर में.* दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2007
5. भाटीवाल प. *राजस्थान की राज्य राजनीति.* जोधपुर: के. सी. प्रकाशन; 2010
6. शक्तावत ग. *महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता व पंचायतीराज व्यवस्थाः एक अवधारणात्मक विवेचना.* जयपुर: नवजीवन पब्लिकेशन; 2011
7. बारेठ न. *राजस्थानः आखिर नेताओं को याद आए आदिवासी.* बीबीसी हिन्दी; 2013 नवंबर 13
8. भट्ट आ. *लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण और उभरता जनजातीय नेतृत्व.* जयपुर: रावत पब्लिकेशंस; 2014
9. कुमार स. *भारतीय युवा और चुनावी राजनीतिः उभरती हुई भागीदारी.* दिल्ली: सेज भाषा; 2019

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 डॉ. रामचंद्र पालीवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/